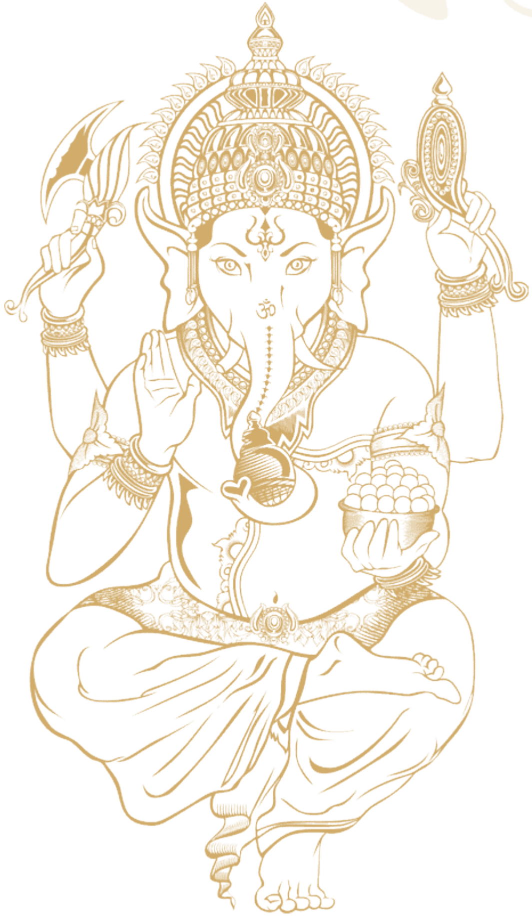

Piyush Ranjan

Raina Mishra

Model: Horoscope-Matching **Order No: 119875801**

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119875801 Date: 24/10/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/08/1996	जन्म तिथि	30/03/1999
शनिवार	दिन	मंगलवार
घंटे 15:51:00	जन्म समय	15:15:00 घंटे
घटी 26:04:45	जन्म समय(घटी)	23:50:34 घटी
India	देश	India
Muzaffarpur	स्थान	Muzaffarpur
26:07:00 उत्तर	अक्षांश	26:07:00 उत्तर
85:23:00 पूर्व	रेखांश	85:23:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:11:32	स्थानिक संस्कार	00:11:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:25:06	सूर्योदय	05:42:46
18:15:57	सूर्यास्त	18:03:55
23:48:41	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:36
धनु	लग्न	सिंह
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	सूर्य
धनु	राशि	सिंह
गुरु	राशि-स्वामी	सूर्य
मूल	नक्षत्र	उ०फाल्गुनी
केतु	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
3	चरण	1
प्रीति	योग	गण्ड
गर	करण	वणिज
भा-भारत	जन्म नामाक्षर	टे-टेस्टी
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	वनचर
श्वान	योनि	गौ
राक्षस	गण	मनुष्य
आद्य	नाड़ी	आद्य
मूषक	वर्ग	श्वान

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 3वर्ष 1मा 14दि		26:46:40	धनु	लग्न	सिंह	08:26:41	सूर्य 5वर्ष 5मा 21दि	
चन्द्र		07:42:49	सिंह	सूर्य	मीन	15:24:14	राहु	
09/10/2025		07:22:56	धनु	चंद्र	सिंह	27:49:56	19/09/2021	
09/10/2035		25:45:16	मिथु	मंगलव	तुला	17:28:51	20/09/2039	
चन्द्र	09/08/2026	04:49:18	कन्या	बुध व	कुंभ	27:27:02	राहु	01/06/2024
मंगल	10/03/2027	14:10:19	धनु व	गुरु	मीन	16:47:00	गुरु	26/10/2026
राहु	08/09/2028	22:00:45	मिथु	शुक्र	मेष	20:34:42	शनि	01/09/2029
गुरु	08/01/2030	12:30:31	मीन व	शनि	मेष	09:23:25	बुध	20/03/2032
शनि	09/08/2031	14:47:20	कन्या व	राहु व	कर्क	27:27:50	केतु	08/04/2033
बुध	08/01/2033	14:47:20	मीन व	केतु व	मक	27:27:50	शुक्र	08/04/2036
केतु	09/08/2033	07:39:43	मक व	हर्ष	मक	21:51:05	सूर्य	02/03/2037
शुक्र	10/04/2035	01:38:29	मक व	नेप	मक	10:08:31	चन्द्र	01/09/2038
सूर्य	09/10/2035	06:34:36	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	16:34:37	मंगल	20/09/2039

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:48:41 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:36

लग्न-चलित

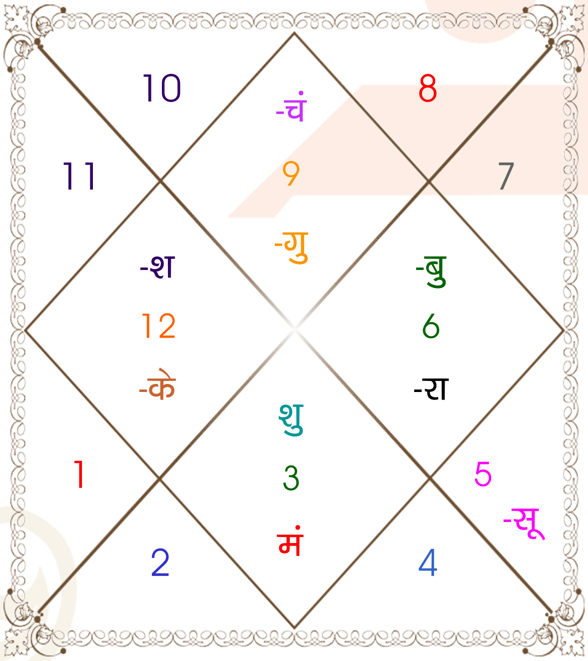

लग्न-चलित

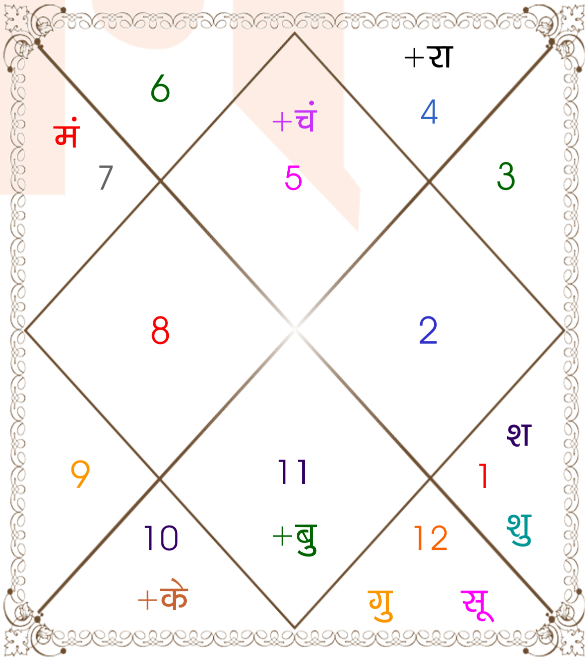

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	श्वान	गौ	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	9.50		

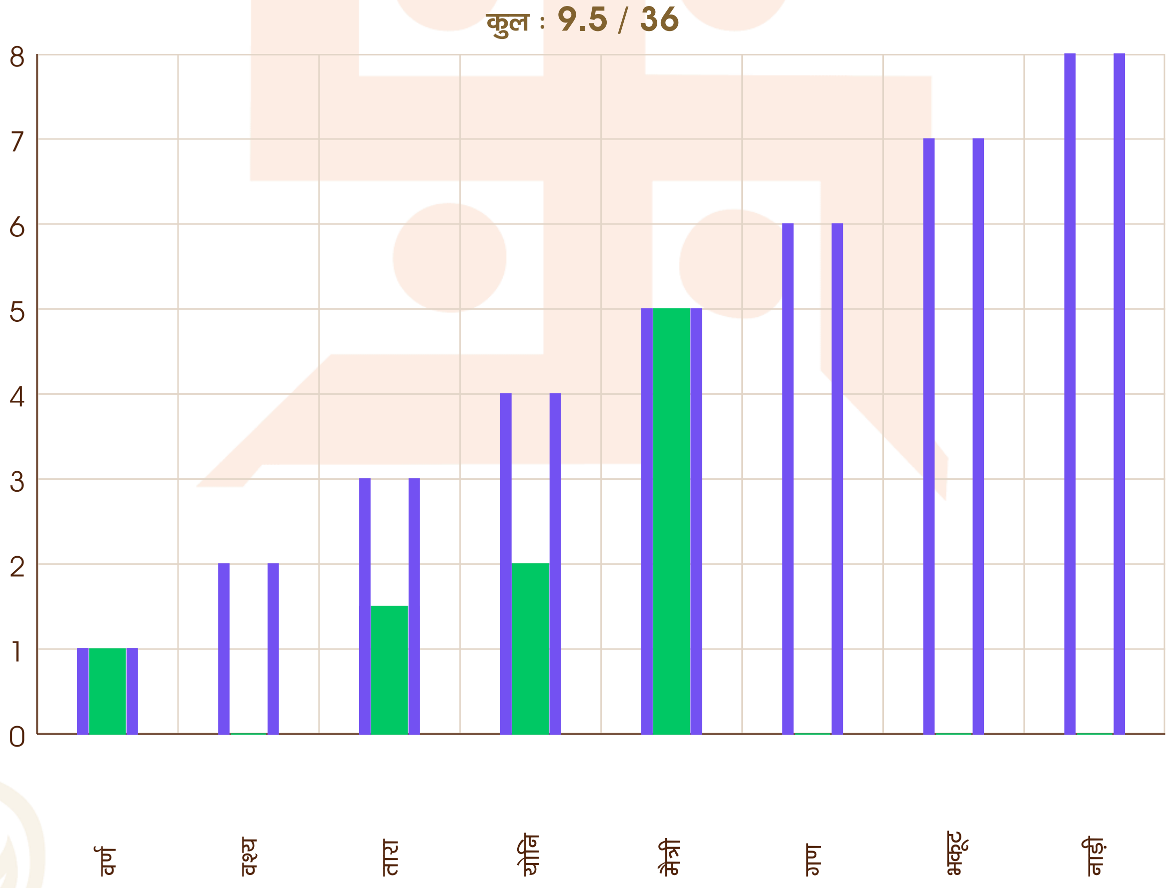

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

च्पलनी त्दरंद का वर्ग मूषक है तथा त्पदं डपीतं का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

च्पलनी त्दरंद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि च्पलनी त्दरंद कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्पदं डपीतं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल त्पदं डपीतं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

च्पलनी त्दरंद तथा त्पदं डपीतं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

च्पलनी त्दरंद का वर्ण क्षत्रिय तथा त्पदं डपीतं का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

च्पलनी त्दरंद का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं त्पदं डपीतं का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है अतः यह मिलान बहुत अशुभ मिलान है। शेर हमेशा मनुष्य के लिए संकट उपस्थित करता है। ये मनुष्य को हानि पहुंचाता है तथा घायल करते हैं व कभी-कभी मारकर खा भी जाते हैं। अतः यह मिलान उचित नहीं है क्योंकि च्पलनी त्दरंद हमेशा त्पदं डपीतं से भय महसूस करेगा। त्पदं डपीतं हमेशा च्पलनी त्दरंद पर हावी रहेगी, पति के ऊपर वर्चस्व स्थापित करेगी तथा अपने पति को अपनी हर आज्ञा के लिए बाध्य करेगी जो स्वीकार करने योग्य नहीं है क्योंकि इससे विकास एवं समृद्धि प्रभावित होगी। त्पदं डपीतं हमेशा कोई न कोई समस्या उत्पन्न करती रहेगी जिससे घर एवं परिवार की शांति भंग होगी।

तारा

च्पलनी त्दरंद की तारा मित्र तथा त्पदं डपीतं की तारा विपत है। त्पदं डपीतं की तारा विपत होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। यह मिलान च्पलनी त्दरंद एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्य एवं नुकसान का कारण बन सकता है। परन्तु कड़े एवं लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सुखदायी हो सकता है। संभव है कि त्पदं डपीतं का रुख सहयोगात्मक नहीं हो तथा आपसी विश्वास, प्रेम एवं समझ की कमी बनी रहे। अक्सर पति एवं पत्नी के बीच संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े रह सकते हैं तथा बच्चे भी इसका गलत फायदा उठायेंगे। जिसके कारण संभव है कि बच्चे योग्य एवं आज्ञाकारी नहीं हों।

योनि

च्पलनी त्दरंद की योनि श्वान है तथा त्पदं डपीतं की योनि गौ है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध

संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में च्पलनी त्दरंद एवं त्पदं डपीतं दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि च्पलनी त्दरंद एवं त्पदं डपीतं के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण च्पलनी त्दरंद एवं त्पदं डपीतं जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

च्पलनी त्दरंद का गण राक्षस है तथा त्पदं डपीतं का गण मनुष्य है। अर्थात त्पदं डपीतं का गण च्पलनी त्दरंद के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

च्पलनी त्दरंद से त्पदं डपीतं की राशि नवम भाव में स्थित है तथा त्पदं डपीतं से च्पलनी त्दरंद की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। च्पलनी त्दरंद की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

च्पलर्नी त्दरंद की नाड़ी आद्य है तथा त्पदं डपेीतं की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। च्पलर्नी त्दरंद एवं त्पदं डपेीतं दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

च्पलनी त्दरंद की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त धनु तथा त्पदं डपीतं की राशि भी अग्नि तत्व युक्त सिंह राशि है। दोनों की तत्वों में समानता के कारण संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा । अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

च्पलनी त्दरंद की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा त्पदं डपीतं की जन्म राशि का स्वामी सूर्य परस्पर मित्र राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं के मध्य प्रेम सहानुभूति तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देने में तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की सच्चे मित्र की तरह उपेक्षा करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन की सुख शांति बनी रहेगी तथा परस्पर सम्मान पूर्वक एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करके व्यवहार करेंगे।

च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष कहलाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी जिससे मानसिक परेशानी का भाव रहेगा। साथ ही अंहकार एवं उपेक्षा की भावना भी एक दूसरे के प्रति रहेगी जिससे आपसी संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। अतः यदि च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं परस्पर सामंजस्य की प्रवृति का पालन करें तथा एक दूसरे के साथ समान रूप से व्यवहार करें तो वैवाहिक जीवन में सुखद क्षणकी प्राप्ति हो सकती है।

च्पलनी त्दरंद का वश्य मानव तथा त्पदं डपीतं का वश्य वनचर है। मानव तथा वनचर की नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं की अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भी भिन्न रहेंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

च्पलनी त्दरंद का वर्ण क्षत्रिय तथा त्पदं डपीतं का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान रहेंगी तथा पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे फलतः इनका कार्य क्षेत्र सुदृढ़ रहेगा।

धन

च्पलनी त्दरंद और त्पदं डपीतं दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

च्पलनौ त्दरंद और त्पदं डपीतं दोनों ही आद्य नाड़ी में हुए है। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष बनता है जिससे इनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु इनका जन्म अलग अलग नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः इससे नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है परन्तु त्पदं डपीतं के स्वास्थ्य पर मंगल का दुष्प्रभाव होगा तथा साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी वे कष्ट की प्राप्ति करेंगी। अतः मंगल के इस दुष्प्रभाव को कम करने के लिए त्पदं डपीतं को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से च्पलनौ त्दरंद और त्पदं डपीतं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त च्पलनौ त्दरंद और त्पदं डपीतं के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में त्पदं डपीतं के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन त्पदं डपीतं को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में त्पदं डपीतं को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से च्पलनौ त्दरंद और त्पदं डपीतं सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार च्पलनौ त्दरंद और त्पदं डपीतं का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

त्पदं डपीतं के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि त्पदं डपीतं धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से त्पदं डपीतं के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी त्पदं डपीतं का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी त्पदं डपीतं से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

च्पलनीं त्दरंद के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को च्पलनीं त्दरंद अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी च्पलनीं त्दरंद के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण च्पलनीं त्दरंद के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।